इकाई 26 मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़ - ब्राउन के विचारों की समालोचना

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य

26.1 प्रस्तावना

26.2 प्रकार्यात्मक पद्धति - मिथक अथवा वास्तविकता

26.3 समाज का विज्ञान बनाम समाजशास्त्र

- 26.3.1 सामाजिक नृशास्त्र का विशिष्ट स्थान
- 26.3.2 रैडक्लिफ़-ब्राउन का क्षेत्रीय शोधकार्य
- 26.3.3 रैडक्लिफ़-ब्राउन का सैद्धांतिक योगदान

26.4 मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन के मार्गदर्शन में नृशास्त्रीय शोधकार्य का विकास

- 26.4.1 मलिनॉस्की का प्रभाव
- 26.4.2 रैडक्लिफ़-ब्राउन का प्रभाव

26.5 बीसवीं सदी के तीसरे-चौथे दशक के बाद नृशास्त्रीय शोध का विकास

26.6 सारांश

26.7 शब्दावली

26.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

26.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

26.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपके लिए संभव होगा

- समाजशास्त्रीय सिद्धांत के विकास में मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन की आपेक्षिक स्थितियों को समझना
- नृशास्त्रियों की आने वाली पीढ़ियों पर मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन के प्रभाव को आंकना।

26.1 प्रस्तावना

जहां यह इकाई इस खंड की पिछली चार इकाइयों का समालोचनात्मक विवरण है वहीं यह समाजशास्त्रीय विचारधारा में आने वाले आधुनिक विकास की झांकी भी है। समाजशास्त्रीय सिद्धांत में मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन ने जो योगदान किया, उसके बारे में इकाई 22, 23, 24 और 25 में विचार किया गया है। इन इकाइयों को पढ़ते समय आपने दोनों विद्वानों के विचारों के सशक्त और कमज़ोर पक्षों के बारे में अपनी सम्मति बनाई होगी। हमने भी इस इकाई में नृशास्त्रीय सिद्धांतों के इतिहास के संदर्भ में इन दोनों विद्वानों के योगदान का समीक्षात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। इस प्रकार के मूल्यांकन से सम्पूर्ण समाजशास्त्रीय विचारधारा में उनकी आपेक्षिक स्थिति को समझने में आपको सहायता मिलेगी।

यह तो आपको मालूम ही है कि मानव-सभ्यता के इतिहास में रुचि रखने वाले सामाजिक विचारकों

ने आदिम समाजों के अध्ययन को उपयोगी समझा। उनके विचार में आदिम समाज मानव विकास की आरंभिक अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसके अध्ययन से उन्हें मानव जाति की प्रगति के नियमों को खोजने में मदद मिली। इस विचार श्रृंखला में मलिनॉस्की ने मूलत: एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण को हमारे सामने रखा। उसके अनुसार आदिम संस्कृतियों को समझने के लिए आवश्यक है कि हम देखें कि कोई भी रीति-रिवाज या विश्वास कैसे उस समाज के अनुरक्षण (maintenance) में काम आता है। इसी दृष्टिकोण को सामाजिक नृशास्त्र की प्रकार्यवादी विचारधारा के रूप में जाना जाने लगा। कुछ विचारकों ने, जिनमें रैडक्लिफ़-ब्राउन (1971: 188-9) भी एक है, इसके अस्तित्व पर भी संदेह किया और इसे केवल एक मिथक के रूप में माना लेकिन फ़र्थ (1957) जैसे कुछ अन्य विचारकों ने सामाजिक वास्तविकता के प्रकार्यात्मक दृष्टि से विश्लेषण करने के मलिनॉस्की के प्रयास को समाजशास्त्रीय अध्ययन में एक नया मोड़ माना।

इस इकाई के भाग 26.2 में बताया है कि गहन क्षेत्रीय शोधकार्य की परंपरा इस विचार-पद्धति की विशेषता है, मानव-व्यवहार को समझने की कोशिश में क्षेत्रीय शोधकार्य से हमारे सामने चमत्कारी परिणाम आए। यही कारण है कि प्रकार्यात्मक पद्धति तथा क्षेत्रीय शोधकार्य दोनों को समाजशास्त्र में लाने का श्रेय मलिनॉस्की को दिया जाता है। क्षेत्रीय शोधकर्ता के रूप में मलिनॉस्की का स्थान सबसे आगे है। हाँ, सिद्धांतकार के रूप में वह पूर्णतया असफल रहा है। उसकी सैद्धांतिक असफलताओं की समीक्षा का फल हुआ कि अन्य विचारकों ने मलिनॉस्की के प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण में कुछ नए तत्व जोड़े। भाग 26.3 में हमने मलिनॉस्की के सैद्धांतिक दृष्टिकोण की कमियों पर विचार करने के बाद रैडक्लिफ़-ब्राउन के साहसपूर्ण प्रयासों के बारे में विचार किया है। उसके ये प्रयास हमें आदिम समाजों को, और उससे भी आगे मोटे-मोटे रूप से मानव-समाजों को समझने में मज़बूत सैद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं। रैडक्लिफ़-ब्राउन ने समाज के विज्ञान की भाँति समाजशास्त्र को देखा और उसमें सामाजिक नृशास्त्र की विशेष जगह बनाई। साथ में उसने मलिनॉस्की द्वारा चलाई क्षेत्रीय शोधकार्य की परंपरा को भी आगे बढ़ाया।

मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन दोनों के अनेक शिष्यों ने अनेक क्षेत्रीय शोधकार्य किये। दोनों विद्वानों के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में व्यापक स्तर पर हुए क्षेत्रीय शोधकार्यों से सामाजिक नृशास्त्र की अभूतपूर्व प्रगति हुई। इसकी संक्षिप्त समीक्षा भाग 26.4 में प्रस्तुत की गई है। मानव समाजों के अध्ययन के लिए हमने इस विषय में आगे चलकर विकसित हुए विचारों की ओर भी भाग 26.4 में संकेत किया है। स्पष्ट है कि प्रकार्यवादी विश्लेषण से मानव व्यवहार की वैकल्पिक व्याख्या प्रस्तुत करने में महती सफलता मिली। यही कारण है कि प्रकार्यवादी पद्धति का समाजशास्त्र में अभी भी अद्वितीय स्थान है, भले ही बाद में अन्य नई-नई पद्धतियों का विकास हुआ।

26.2 प्रकार्यात्मक पद्धति - मिथक अथवा वास्तविकता

आपको ज्ञात ही है कि मलिनॉस्की ने ट्रॉब्रिएण्ड द्वीपवासियों के नृजातिविवरण को सुव्यवस्थित तर्कसंगत रूप में प्रस्तुत करने के लिए 'प्रकार्य' की अवधारणा का प्रयोग किया। मानव व्यवहार के विविध और जटिल विन्यासों को बोधगम्य बनाने के लिए यह एक सफल पद्धति सिद्ध हुई। इस पूरे प्रयोग ने एक चिंतन-पद्धति का रूप धारण कर लिया, जिसे प्रकार्यवाद के नाम से जाना जाने लगा। इस खंड की प्रस्तावना में पहले ही यह उल्लेख किया जा चुका है, सामाजिक विज्ञानों में प्रकार्यवाद एक जाना-माना सिद्धांत बन गया है ('सिद्धांत' शब्द के लिए देखिए कोष्ठक 26.1)। मलिनॉस्की ने मानव सभ्यता की प्रगति को समझने के पूर्व-स्थापित तरीकों को अस्वीकार कर दिया और उसकी जगह आदिम लोगों के रीति-रिवाजों और विश्वासों आदि का वैकल्पिक तरीक़ा सामने रखा। यह उसका समाजशास्त्रीय शोधकार्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान था।

अवश्य ही मलिनॉस्की की काफ़ी आलोचना की गई क्योंकि उसने अपने क्षेत्रीय शोधकार्य पर आधारित निष्कर्षों को एकदम सीधे सम्पूर्ण मानवीयता की व्याख्या में लागू किया। ऐसा करना

वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार नहीं माना जाता है। दूसरी ओर मलिनॉस्की ने हर रिवाज के उपयोग अथवा प्रकार्य को समझने में जो नेतृत्व प्रदान किया, उसे भी नकारा नहीं जा सकता। एक विश्वास अथवा कार्यकलाप को समझाने के लिए उसे अन्य कार्यकलापों के साथ इसके संबंधों को भी देखना पड़ा। इससे उसे ट्रॉब्रिएंड द्वीपवासियों के जीवन के बारे में अपने विवरण को एक सांस्कृतिक समग्रता की तरह समझने में मदद मिली। मलिनॉस्की के समकालीन विकासवादियों और प्रसारवादियों द्वारा मानव-व्यवहार के बारे में दी गई व्याख्या के असंतोष जनक स्तर को देखते हुए यह कोई कम उपलब्धि न थी।

कोष्ठक 26.1: सिद्धांत

यह सामाजिक विज्ञानों में सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाला शब्द है। आम तौर पर इससे अमूर्त विचारों (abstract terms) की व्यवस्थित रूपरेखा का पता लगता है। हर विषय विशेष में इस प्रकार के **अमूर्तीकरण (abstractions)** से विचारों के समायोजन में मदद मिलती है। प्राय: मानव-समाज और मानव-संबंधों के बारे मे विचारों की अभिव्यक्ति के लिए 'सामाजिक सिद्धांत' शब्द का प्रयोग होता है। ऐच्छिक पाठ्यक्रम ई.एस.ओ.-13 में हमने इस शब्दावली का प्रयोग मानव-समाज के बारे में अमूर्त अवधारणाओं की रूपरेखा बनाने के लिए किया है। यह मूलत: व्यवस्थित रूप में सुविचारित परस्पर-संबद्ध विचारों का पुंज है, जिसे सामान्य रूप से विद्वत्जनों द्वारा समझा और स्वीकार किया जाता है।

मलिनॉस्की के प्रकार्यवाद के मुख्य अभिलक्षणों को सार रूप में नीचे प्रस्तुत किया गया है।

i) उन्नीसवीं शताब्दी के विद्वानों द्वारा सामाजिक तत्वों के इधर-उधर से एकत्रित विवरण की तुलना में मलिनॉस्की ने अपने क्षेत्रीय शोधकार्य का लेखा-जोखा दिया और अपनी सामग्री को सुव्यवस्थित और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया।

ii) उसने पहले संस्कृति के केवल एक ही विशिष्ट पक्ष पर ध्यान केन्द्रित किया और धीरे-धीरे पूरी संस्कृति को इस विवरण के घेरे में ले लिया। इससे उसके प्रबंधों (मोनोग्राफ़ों) में विषय-संबंधी एकरूपता स्थापित हुई।

iii) मलिनॉस्की ने व्यक्तियों, उनके व्यवहार, उनकी प्रतिक्रियाओं और उनकी भाव-प्रवण स्थितियों पर विशेष बल देकर आदिम समुदाय के सांस्कृतिक विन्यास को हमारे सामने सजीव रूप में प्रस्तुत किया। व्यक्तिगत रुचियों और सामाजिक व्यवस्था के संबंध में जो उसके विचार थे उन्हीं के कारण वह मनुष्य के सामाजिक व्यवहार को संतुलित रूप से समझ सका। आज मलिनॉस्की के बहुत समय बाद भी नृशास्त्री प्रयोगात्मक मनोविज्ञान और वैयक्तिक आवश्यकताओं में उसकी रुचि के बारे में बताना प्रासंगिक समझते हैं।

iv) मलिनॉस्की ने मनुष्य की प्रकृति के बारे में प्रतिपादित सिद्धांतों की समालोचना करते हुए लोगों की कथनी और करनी के बीच अंतर का उल्लेख किया। इससे वैयक्तिक रुचियों और सामाजिक व्यवस्था के बीच विद्यमान तनाव के प्रति उसकी जागरूकता का पता चलता है। उदाहरण के लिए उसने पुस्तक *एर्गोनॉट्स ऑफ़ द वेस्टर्न पेसिफ़िक* में विनिमय में पारस्परिकता के तत्व की चर्चा की है। विनिमय के सिद्धांत में उसकी अंतर्दृष्टि से प्रेरणा पाकर फ्रांसीसी विद्वान मॉस (Mauss) ने उपहार के विनिमय का विश्लेषण किया। बाद में मॉस ने लेवी स्ट्रॉस को प्रभावित किया। लेवी स्ट्रॉस के अनुसार, पारस्परिक विनिमय का यह सिद्धांत सामाजिक नियंत्रण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है। विनिमयात्मक विश्लेषण (transactional analysis) की जड़ें लेवी स्ट्रॉस के इसी विचार में निहित है।

हमें यह नहीं मालूम कि आपके मन में मलिनॉस्की के प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण के बारे में कुछ प्रश्न है या नहीं। शायद आपको याद होगा कि हमने इकाई 22 के अभ्यास सोचिए और करिए 2 में

आपसे कहा था कि आप मलिनॉस्की के दृष्टिकोण में दिखाई देने वाली कमियों के बारे में बताइए। हमने यहां आपको उनमें से कुछ कमियों के बारे में बताया है।

i) मलिनॉस्की ने संस्कृति के प्रत्येक पक्ष को दूसरे पक्षों के साथ जोड़ा है। प्रश्न यह उठता है कि यदि हर पक्ष प्रत्येक पक्ष के साथ जुड़ा है तो आखिर इस जुड़ने का अंत कहां होगा? यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि संबंधों की संगति (relevance) के इस प्रश्न की ओर मलिनॉस्की का ध्यान ही नहीं गया। उसने अपने अध्ययन में विशिष्ट समस्याओं पर शोधकार्य नहीं किया। वास्तव में उसका पूरा ध्यान एकीकृत सांस्कृतिक समग्रता के निर्माण की ओर ही रहा।

ii) उसके विवरण में विश्लेषणात्मक संगति (analytical relevance) न होने का मतलब यह है कि उसके काम में अमूर्तीकरण (abstraction) का अभाव था। यही कारण है कि उसके काम में सिद्धांत का विकास नहीं हुआ।

iii) मलिनॉस्की का प्रकार्यवाद स्थूल (crude) उपयोगितावाद के समान है, जहां हर चीज़ का अस्तित्व केवल किसी न किसी प्रयोजन के लिए होता है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि उसके मन में कभी भी सामाजिक व्यवस्था (social system) का विचार नहीं आया, जो विभिन्न वर्गों के बीच संबंधों पर आश्रित है।

iv) मलिनॉस्की (1935: 479-81) जनजातीय समाजों को प्रभावित करने वाले परिवर्तनों की ओर भी ध्यान नहीं दे पाया। उसने यह स्वीकार किया कि अपनी पुस्तक *कोरल गार्डन्स एंड देअर मैजिक* में ट्रॉब्रिएंड द्वीपवासियों पर यूरोप के प्रभाव को शामिल नहीं किया। मलेनेशिया में अपने द्वारा किए गए क्षेत्रीय शोधकार्य में उसने इसे अपनी "सबसे बड़ी कमी" माना है।

v) क्षेत्रीय शोधकार्य के महत्व पर ज़ोर देने के बावजूद भी मलिनॉस्की विकासवाद और प्रसारवाद को पूरी तरह उखाड़ नहीं पाया। बल्कि उसने इन दोनों परंपराओं में इतना भर और जोड़ दिया कि किसी विशिष्ट समुदाय का सिंक्रानिक विश्लेषण भी किया जाए अर्थात् तात्कालिक दशाओं के संदर्भ में विश्लेषण किया जाए। वास्तव में, मलिनॉस्की (1929) ने लिखा कि "मुझे आज भी विकास की प्रक्रिया और योजनाबद्ध विकास में विश्वास है। मैं यह समझता हूँ कि विकास संबंधी प्रश्नों के उत्तर के लिए हमें उन तथ्यों और संस्थाओं के अनुभवाश्रित अध्ययन का सहारा लेना होगा, जिनके अतीत के विकास का पुनर्निर्माण करने की हमारी इच्छा है।"

मलिनॉस्की के कार्य का विशिष्ट योगदान एक और ही दिशा में है। यह उसके क्षेत्रीय शोधकार्य की पद्धतियों की खोज से संबंधित है। उसके प्रकार्यवाद के सिद्धांत की खूब आलोचना हुई और आने वाले विद्वानों ने इसमें सुधार किया। परंतु शायद ही कोई अन्य समाजशास्त्री या नृशास्त्री हो जो उसके क्षेत्रीय शोधकार्य की प्रविधियों में सुधार करने का दावा कर सके। उसके द्वारा निर्धारित मानकों का उपयोग आज भी नृशास्त्र संबंधी क्षेत्रीय शोधकार्य की गुणवत्ता को मापने के लिए पैमाने का काम करता है। आज भी यदि नृशास्त्री समाज विशेष का अध्ययन करना चाहे तो उसे वहां के लोगों के बीच कम से कम अठारह महीने रहना होता है। इसके लिए उससे अपेक्षा की जाती है कि वह स्थानीय भाषा सीखे और सामग्री एकत्र करने के लिए स्थानीय भाषा का व्यवहार करे। उन लोगों के बीच रहते हुए और उनके कार्यकलापों में भागीदार बनकर मनोवैज्ञानिक तौर पर उसे अपने आपको "वे" से "हम" में बदलना होता है। दूसरे शब्दों में, उसे उस समुदाय का अंग बन जाना होता है। पाउडरमेकर (1970: 347) जैसे कुछ लोगों का दावा है कि मलिनॉस्की द्वारा बनाए गए मार्गदर्शक आदर्श केवल मिथक हैं, जो मलिनॉस्की के अपने करिश्मों का परिणाम है। ऐसे लोगों का यह कहना है कि मलिनॉस्की इन आदर्शों तक स्वयं भी पूरी तरह से नहीं पहुंच पाया। लेकिन इसके साथ ही हमने यह भी देखा है कि इस मिथक से ही

बहुत से नृशास्त्रियों का मार्गदर्शन हुआ है। अर्थात् चाहे मलिनॉस्की ने स्वयं वे सब बातें पूरी नहीं कीं जिन्हें उसने आदर्श की तरह स्थापित किया परंतु परवर्ती नृशास्त्रियों ने मलिनॉस्की का अनुसरण करने के नाम पर उन आदर्शों को पूरा किया।

मलिनॉस्की के योगदान के मूल्यांकन को सारांश में कहा जा सकता है कि उसने न केवल सामाजिक नृशास्त्र को नई दृष्टि प्रदान की बल्कि सामान्य रूप से मानव व्यवहार की जांच को, किसी सीमा तक व्यक्ति के अपने आचरण को, नई दृष्टि प्रदान की। इसके साथ ही उसने प्रेक्षण और सामग्री एकत्र करने की नई प्रविधियां भी निकालीं। लेकिन उसमें अमूर्तीकरण (abstraction) के स्तर पर विचार करने की योग्यता का अभाव था। वस्तुत: वह अमूर्त सिद्धांतों के बारे में बहुत ही संशयपूर्ण था। नृशास्त्र के शोधकार्य के मार्गदर्शन में सैद्धांतिक अवधारणाओं को विकसित करने का काम मलिनॉस्की के समकालीन विद्वान रैडक्लिफ़-ब्राउन ने पूरा किया। कालांतर में रैडक्लिफ़-ब्राउन ने सामाजिक नृशास्त्र को विज्ञान की शाखा के रूप में स्थापित किया। इस विषय में हमने इकाई के अगले भाग में चर्चा की है।

बोध प्रश्न 1

i) क्या मलिनॉस्की एक विकासवादी था? पक्ष अथवा विपक्ष में उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

ii) समाज विशेष का व्यवस्थित नृजातीय विवरण (ethnographic account) हमें उस समाज की संस्कृति की और अधिक अच्छी तरह से समझने में किस तरह सहायक होता है? अपना उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

26.3 समाज का विज्ञान बनाम समाजशास्त्र

रैडक्लिफ़-ब्राउन का सैद्धांतिक दृष्टिकोण उसके *ए नेचुरल साइंस ऑफ़ सोसाइटी* नामक निबंध में दिया गया है। मानव के मनोवैज्ञानिक अध्ययनों की प्रतिक्रिया में उसके सामने तुलनात्मक समाजशास्त्र के रूप की एक अंतर्दृष्टि थी, जिसके अनुसार तुलनात्मक समाजशास्त्र को सारे सामाजिक विज्ञानों में प्रधान विषय माना जाना चाहिए। यहां हमने पहले इस बात की चर्चा की है कि कैसे उसने सामाजिक नृशास्त्र के लिए एक अलग स्थान बनाया। दूसरे भाग में हमने उसके क्षेत्रीय शोधकार्य पर चर्चा की है। तीसरे भाग में रैडक्लिफ़-ब्राउन को एक सिद्धांतवादी के रूप में देखा गया है।

26.3.1 सामाजिक नृशास्त्र का विशिष्ट स्थान

जैसा कि आपने इकाई 24 और 25 में पढ़ा है रैडक्लिफ़-ब्राउन की यह पक्की धारणा थी कि सामाजिक नृशास्त्र को अपना स्वरूप विज्ञान के तरीक़े पर ढालना होगा। इसकी पद्धतियां, अवधारणाएं और निष्कर्ष पूर्ण रूप से वैज्ञानिक, निष्पक्ष और जाँच के योग्य होने चाहिए। रैडक्लिफ़-ब्राउन ने सामाजिक नृशास्त्र (social anthropology) और नृजाति शास्त्र (ethnology) के बीच स्पष्ट अंतर किया है। नृजाति शास्त्री अनुमानों पर आधारित इतिहास (conjectural history) की रचना के कार्य में लगे थे, जो उसकी दृष्टि में एकदम अवैज्ञानिक

कार्य था। आपने इकाई 25 में पढ़ा था कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने यह बात ज़ोर देकर कही कि **आदिवासी जनजातियों** के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक विवरण आवश्यक नहीं है। यह कैसे हुआ? प्रश्न उठाने की जगह रैडक्लिफ़-ब्राउन ने दर्खाइम की तरह ये जानना अधिक उचित समझा कि इसका अभिप्राय क्या है? अर्थात् जिस पहलू का अध्ययन किया जाए उसका अर्थ समझ में आना चाहिए। संक्षेप में, रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अपने समय में प्रचलित उस प्रवृत्ति के विरुद्ध आवाज़ उठाई जिसमें किसी भी विषय का अध्ययन ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि में करने पर ज़ोर दिया जाता था। उसने जिन समाजों का अध्ययन किया, उनके समसामयिक महत्व पर विशेष बल दिया तथा उन समाजों का **एककालिक** (Synchronic) अध्ययन किया।

रैडक्लिफ़-ब्राउन सामाजिक परिवेश की मनोवैज्ञानिक शब्दावली में व्याख्या करने के बारे में भी सतर्क था। मलिनॉस्की के विपरीत उसने मनोवैज्ञानिक व्याख्याओं से बचना उचित समझा। हमने यह बात बार-बार कही है कि किस प्रकार मलिनॉस्की का प्रकार्यात्मक सिद्धांत जीववैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों की ओर अधिक झुका हुआ था। रैडक्लिफ़-ब्राउन इस जाल से बचा रहा। उसकी दृष्टि में सामाजिक नृशास्त्र का संबंध, मुख्य रूप से, जीव वैज्ञानिक प्रकार्यों के बजाय सामाजिक प्रकार्यों से था क्योंकि समाज में हमारा संबंध व्यक्ति के जैविक अस्तित्व के बजाय सामाजिक अस्तित्व से होता है (देखिए कूपर 1975: 86)।

सामाजिक नृशास्त्र के लिए अलग क्षेत्र निर्धारित करने के प्रयास के बावजूद रैडक्लिफ़-ब्राउन अपने आपको विज्ञान की पृष्ठभूमि से अलग नहीं कर सका। इसका आभास उसकी इस बात से मिलता है कि उसने वैज्ञानिक पद्धतियों, सुदृढ़ अवधारणाओं और समाज के बारे में नियमों को निर्धारित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है। जैसे-जैसे सामाजिक नृशास्त्र का विकास हुआ, इसके साथ-साथ ही उसके इन विचारों को दकियानूसी समझा जाने लगा।

फिर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि सामाजिक नृशास्त्र में रैडक्लिफ़-ब्राउन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उसने वस्तुत: भावी पीढ़ी के प्रतिभाशाली विद्वानों के लिए मार्ग प्रशस्त किया (इस विषय में आपको भाग 26.4 में जानकारी दी गई है)। औरों को रास्ता दिखाने के पहले उसने स्वयं भी क्षेत्रीय शोधकार्य किया। आइए, इस बारे में कुछ जानें।

26.3.2 रैडक्लिफ़-ब्राउन का क्षेत्रीय शोधकार्य

पिछली इकाइयों को पढ़कर आपने मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़ ब्राउन की आज के सामाजिक नृशास्त्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका को समझा होगा। अब तक आपको यह ज्ञात हो गया होगा कि जिस क्षेत्रीय शोधकार्य को आजकल व्यवहार में लाया जाता है, उसे इतना महत्वपूर्ण स्थान मलिनॉस्की ने ही दिलाया। रैडक्लिफ़-ब्राउन ने भी पर्याप्त मात्रा में क्षेत्रीय शोधकार्य किया। लेकिन, बहुत से विद्वानों का विचार है कि मलिनॉस्की के प्रचुर और जीवन्त क्षेत्रीय शोधकार्य की तुलना में रैडक्लिफ़-ब्राउन के क्षेत्रीय शोधकार्य की गुणवत्ता नगण्य है।

एडम कूपर (1975: 60) के शब्दों में रैडक्लिफ़-ब्राउन का क्षेत्रीय शोधकार्य "सर्वेक्षण करना और उसमें से नृजाति-विवरण के लिए किसी तरह शोध-सामग्री निकालना था। यह मलिनॉस्की द्वारा ट्रॉब्रिएण्ड द्वीपवासियों के बीच किए गए शोधकार्य की तुलना में कुछ भी नहीं था।" उदाहरण के लिए, अंडमान द्वीप समूह में अपने पहले क्षेत्रीय अध्ययन में रैडक्लिफ़-ब्राउन (1964) ने वहां की स्थानीय भाषा को सीखने का भरसक प्रयत्न किया। लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। अंत में, उसने हिंदुस्तानी भाषा के माध्यम से सामग्री एकत्र करनी शुरू की, लेकिन उस भाषा को वहां के स्थानीय लोग अच्छी तरह से नहीं समझते थे। वह अपने क्षेत्रीय शोधकार्य में तभी कुछ प्रगति कर पाया, जब उसे वहाँ अंग्रेजी-भाषा समझने वाला एक व्यक्ति मिला और वह उसके लिए संपर्क व्यक्ति का काम करने लगा।

अंडमान द्वीपवासियों के बीच उनके रहन-सहन और रीति-रिवाजों में घुल-मिल कर काम करने के बजाय रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अपने आपको उनसे अलग रखा और उनसे दूरी बनाए रखी जो उसके क्षेत्रीय शोधकार्य में स्पष्ट झलकती है। आस्ट्रेलिया में 1910 में किए गए क्षेत्रीय शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य ऑस्ट्रेलियाई लोगों की जटिल नातेदारी व्यवस्था के बारे में जानकारी एकत्र करना था। इस काम के लिए उसने अपने दल के लोगों के साथ बर्नियर द्वीप में कई महीने बिताए। यह ऐसी जगह थी, जहाँ बंदियों के लिए बने अस्पताल में रतिज रोगग्रस्त आदिवासियों का इलाज होता था।

रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अंशत: इन रोगी आदिवासियों की स्मृतियों के आधार पर कुछ विशिष्ट प्रकार के उन आदिवासियों की नातेदारी व्यवस्था का कुछ आधा-अधूरा सा मॉडल तैयार किया। वह उनकी नातदेारी की तात्विक संरचनाओं की खोज में इतना तल्लीन हो गया कि उसने ऑस्ट्रेलिया में उस समय पाई जाने वाली बहुत सी जनजातियों का अध्ययन करने पर कोई ध्यान नहीं दिया।

रैडक्लिफ़-ब्राउन का विशेष ध्यान इस बात पर था कि कैसे उपलब्ध तथ्यों को तर्कसंगत, स्पष्ट, सैद्धांतिक सांचे में ढाला जाए। आश्चर्य नहीं कि इस प्रक्रिया में वह जीते-जागते इंसानों को और उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं, विचारों और मूल्यों को भूल गया। इसकी तुलना में मलिनॉस्की ने अपने क्षेत्रीय शोधकार्य में द्वीपवासियों की मानवता, उनके मनोभावों, अभिप्रेरणाओं और उद्देश्यों को स्पष्ट रूप में उभार कर हमारे सामने ला दिया। इस विषय में कहा जा सकता है कि मलिनॉस्की के क्षेत्रीय शोधकार्य में विषय-सामग्री तो पर्याप्त मात्रा में थी, लेकिन उसके विश्लेषण के लिए उसके पास उपयुक्त परिप्रेक्ष्य नहीं था। इसके विपरीत, रैडक्लिफ़-ब्राउन के पास उपयुक्त परिप्रेक्ष्य तो था लेकिन उसके पास विषय-सामग्री का अभाव था। पिछली इकाइयों में यह बात बार-बार ज़ोर देकर कही गई है कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने सामाजिक नृशास्त्र को सैद्धांतिक प्रेरणा और दृढ़ अवधारणाएं प्रदान कीं ताकि क्षेत्रीय शोधकार्य अधिक बारीकी से और सम्बद्ध तरीके से किया जा सके।

26.3.3 रैडक्लिफ़-ब्राउन का सैद्धांतिक योगदान

आपने पिछली इकाइयों में पढ़ा कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने सामाजिक संरचना और प्रकार्य की जिन अवधारणाओं को परिष्कृत किया वे क्षेत्रीय शोधकर्ताओं द्वारा एकत्र की हुई सामग्री की व्याख्या करने में सहायक होती है। आइए, हम एक बार फिर इन अवधारणाओं की तुलनात्मक रूप से समीक्षा करें।

i) सामाजिक संरचना और प्रकार्य

मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अपने पूर्ववर्ती विकासवादियों की धारणा के विपरीत आदिम समाज के लोगों के अस्तित्व को जीवंत हस्तियों के रूप में स्वीकार किया। विकासवादियों की दृष्टि में आदिम समाज विकास की श्रृंखला में मात्र एक कड़ी की भाँति है। परंतु दोनों अर्थात् मलिनॉस्की व रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अटकलबाज़ियों और अनुमान पर आधारित इतिहास को अस्वीकार किया और आदिम लोगों के अध्ययन को उन्हीं के संदर्भ में करने को प्राथमिकता दी। ये दोनों ही विचारक सामाजिक नृशास्त्र की प्रकार्यवादी विचारधारा से जुड़े थे। इन्होंने आदिम समाजों से संबंधित सामाजिक संस्थाओं और उनके रीति-रिवाज़ों का अध्ययन उन समाजों के लिए उनकी प्रासंगिकता एवं मूल्यों अथवा प्रकार्यों के संदर्भ में करना चाहा। लेकिन जहाँ मलिनॉस्की की प्रकार्य संबंधी धारणा मुख्य रूप से शरीर-क्रिया और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं पर आधारित थी (देखिए इकाई 22), वहां रैडक्लिफ़-ब्राउन की रुचि सामाजिक प्रकार्यों या समाज के अस्तित्व की दशाओं में थी।

हमने आपको पहले ही बताया है कि रैडक्लिफ़-ब्राउन के विचारों पर (देखिए इकाई 24) दर्खाइम के समाजशास्त्र का स्पष्ट प्रभाव था। रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार धार्मिक अनुष्ठानों, रीति-रिवाजों

तथा उनकी कार्य पद्धतियों और विश्वासों को उस सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में देखा जाना चाहिए जहाँ से वे आए हैं और जिस तरह से उन्होंने उस सामाजिक व्यवस्था को एकीकृत किया और उसे बनाए रखा। पहले की हमारी चर्चा से, जिसमें आदिम समूहों में 'मामा' की भूमिका पर जानकारी दी गई है, यह बात खूब अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है (देखिए इकाई 25)।

सोचिए और करिए 1

यदि आपको एक समूह विशेष का नृशास्त्रीय अध्ययन करना हो तो आपका तरीक़ा क्या होगा -- मलिनॉस्की का अनुसरण करना और वैयक्तिक रुचियों और सामाजिक व्यवस्था दोनों का ध्यान रखना या रैडक्लिफ़-ब्राउन के रास्ते पर चलना और केवल समाज के अस्तित्व की दशाओं के बारे में ही सोचना। इस अभ्यास को करने के लिए चुने अपने तरीक़े पर एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए।

लेकिन जहां एक ओर मलिनॉस्की का सैद्धांतिक प्रयास प्रकार्य की धारणा के साथ समाप्त हो जाता है, वहां रैडक्लिफ़-ब्राउन के पास इसके अतिरिक्त सामाजिक संरचना का सुविकसित विचार है। रैडक्लिफ़-ब्राउन के अनुसार सामाजिक संरचना का अर्थ सामाजिक संबंधों का वह तंत्र है जो समाज का निर्माण करने वाले व्यक्तियों द्वारा बनाया जाता है। सामाजिक संरचना के वर्णन से प्रकार्य का विचार और अधिक स्पष्ट और व्याख्यात्मक हो जाता है। इकाई 25 के भाग 25.4 में पहले ही इस बात को अच्छी तरह से स्पष्ट किया जा चुका है।

आइए, अब हम देखें कि मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन, दोनों ने नृशास्त्रियों की भावी पीढ़ियों को किस प्रकार प्रभावित किया। परंतु पहले आप बोध प्रश्न 2 का हल कीजिए।

बोध प्रश्न 2

i) रैडक्लिफ़-ब्राउन का क्षेत्रीय शोधकार्य मलिनॉस्की के क्षेत्रीय शोधकार्य से किस तरह भिन्न है? अपने प्रश्न का उत्तर चार पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

ii) मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन के प्रकार्य संबंधी विचारों में अंतर स्पष्ट कीजिए। अपना उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

26.4 मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन के मार्गदर्शन में नृशास्त्रीय शोधकार्य का विकास

इंग्लैंड में बीसवीं शताब्दी के तीसरे और चौथे दशक में नृशास्त्रीय शोधकार्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। इस अवधि में मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन के नेतृत्व में नृशास्त्रियों ने पहले प्रकार्यवादी और बाद में संरचनात्मक प्रकार्यवादी दृष्टि से समाजशास्त्रीय सामग्री एकत्र की और उनकी एकदम नये ढगं से व्याख्या की। अत्यधिक सावधानी से किए गए इन क्षेत्रीय शोधकार्यो में मलिनॉस्की का स्पष्ट प्रभाव झलकता है। दूसरी ओर अमूर्तीकरण (abstraction) द्वारा सिद्धांत

निर्माण के प्रयासों में हमें रैडक्लिफ़-ब्राउन का पूरा प्रभाव दिखता है। हमने यहां संक्षेप में समाजशास्त्रीय विचारधारा के विकास के सृजनात्मक चरण की मुख्य-मुख्य बातों की जांच की है।

26.4.1 मलिनॉस्की का प्रभाव

नृशास्त्र के क्षेत्र में मलिनॉस्की का बहुत ही सशक्त प्रभाव रहा है। संस्कृति और आवश्यकताओं से संबंधित उसका सैद्धांतिक दृष्टिकोण चाहे हमें अब प्रेरणा न दे लेकिन अभी भी शोध पद्धति और दार्शनिक विषयों में उसकी रुचि का मलिनॉस्की की स्मृति में प्रति वर्ष आयोजित भाषणों में बार-बार उल्लेख होता है। उसके विद्यार्थियों पर उसके विचारों का बहुत व्यापक प्रभाव पड़ा जो आपको *मैन एंड कल्चर* नामक पुस्तक में देखने को मिलता है। इस पुस्तक का संपादन उसके विद्यार्थी रेमंड फ़र्थ (1957) ने किया था। इस संकलन में विद्वानों के निबंध शामिल हैं। ये विद्वान हैं : ऑड्रे. आई. रिचर्ड्स, रॉल्फ़ पिडिंगटन, टालकट पार्सन्स, फ़िलिस कैबरी, जे. आर. फ़र्थ, ई. आर. लीच, आई. शपीरा, मेयर फ़ोर्टीस, एस. एफ़. नाडेल, रेमंड फ़र्थ, लूसी मेयर और एच. इयन हॉग्बिन। मलिनॉस्की के छात्रों और सहयोगियों द्वारा लिखे हुए ये निबंध इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि मलिनॉस्की के विचारों का उनके कार्यों और रचनाओं पर कितना प्रभाव था। इस संकलित कृति का अभिप्राय मलिनॉस्की की प्रशंसा करना नहीं था बल्कि इसका उद्देश्य समसामयिक समाजशास्त्र में मलिनॉस्की के योगदान और उसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना था।

विशिष्ट समाजों के गहन समाजशास्त्रीय अध्ययनों को पूरा करने के क्षेत्रीय शोधकार्य की तकनीकों को विकसित करने के उसके प्रयास को इवन्स प्रिचर्ड (1951), फ़र्थ (1951) और इससे पूर्व रिचर्ड्स (1939) आदि ने भरपूर सराहा। सन् 1929 से 1940 के बीच लिखे गए **नृजाति विवरण** में मलिनॉस्की के प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण के भरपूर उपयोग की जानकारी मिलती है।

निष्कर्षों को उदाहरण देकर सिद्ध करने की उसकी विधि का बाद के विद्धानों ने भी अनुकरण किया। उदाहरण के लिए, फ़र्थ की पुस्तक *वी द टिकोपिया* (1936) में और शपीरा की पुस्तक *मेरिडलाइफ़ इन एन अफ़्रीकन ट्राइब* (1940) जैसी मोटी किताबों में परिवार संस्था की व्याख्या प्रकार्य के संदर्भ में है। इनमें प्रजनन और समाजीकरण के प्रकार्य सामाजिक जीवन के अन्य पहलुओं से जोड़े गए हैं। इसी तरह, रिचर्ड्स (1939) ने उत्तरी रोडेशिया की बेम्बा जनजाति के आर्थिक कार्यकलापों का विवरण देते हुए भरण-पोषण अथवा आजीविका प्रदान करने वाले प्रकार्यों का वर्णन किया। इन विशालकाय पुस्तकों में जो लंबे-लंबे विवरण दिए गए हैं, वे वास्तव में मलिनॉस्की पद्धति पर आधारित हैं। इनमें सामाजिक संगठन की धारणा और इससे संबंधित सिद्धांतों की कमी है। आधारभूत वास्तविकताओं के वर्णन से ही समझ लिया जाता है कि सामाजिक संगठन की अवधारणा को बता दिया गया है। दूसरे शब्दों में, इन पुस्तकों में विश्लेषण और वर्णन के बीच का मिश्रित रूप प्रस्तुत होता है जो मलिनॉस्की की विद्वत्ता का सामान्य अभिलक्षण है।

मलिनॉस्की के पास विश्व के विभिन्न भागों से विद्यार्थी आते थे, जिनमें ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और भारत भी शामिल हैं। इनमें हॉग्बिन, हार्ट पिडिंगटन, कैबरी और स्टैनर ऑस्टेलिया व न्यूज़ीलैंड से थे। शायद आप मलिनॉस्की के भारतीय विद्यार्थी के बारे में कुछ जानकारी पाना चाहें। ये थे डी. एन. मजूमदार जिन्होंने टी. सी. हाडॅसन के मार्गदर्शन में सन् 1935 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी-एच डी. का शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। उन्होंने 1937 में इस काम पर आधारित पुस्तक ए *ट्राइब इन ट्रांजीशन: ए स्टडी इन कल्चर पैटर्नस* प्रकाशित की। मलिनॉस्की के पदचिहों पर चलते हुए इस पुस्तक में प्रकार्यात्मक पद्धति समग्रतावादी (holistic) दृष्टिकोण को अपनाया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि मजूमदार (1947: 1) मलिनॉस्की के संस्कृति के विचार पर लट्टू हो गए जिसे मलिनॉस्की ने जैविक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया था।

26.4.2 रैडक्लिफ़-ब्राउन का प्रभाव

रैडक्लिफ़-ब्राउन पहले पहल 1920 में प्रोफ़ेसर के पद पर नियुक्त हुआ, जब उसे दक्षिणी अफ़्रीका के केपटाउन विश्वविद्यालय में नृशास्त्र का विभाग आंरभ करने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस प्रकार, उसके जीवन के एक नए दौर की शुरुआत हुई जिसमें उसने अपना जीवन अध्यापन, लेखन, सिद्धांतों के निर्माण और नई पीढ़ी के सामाजिक नृशास्त्रियों को प्रशिक्षित करने में लगाया। केपटाउन में उसने अफ़्रीकी भाषाओं और अफ़्रीकी विषयों के अध्ययन का विद्यापीठ स्थापित किया। सन् 1926 में वह सिडनी में नियुक्ति के लिए ऑस्ट्रेलिया चला गया। वहां उसने पूर्व स्नातक छात्रों के लिए एक पाठयक्रम आंरभ किया। इसके अलावा, उसने वहां आदिम जातियों के बारे में कई अनुसंधान परियोजनाएं शुरू कीं और *ओशिएनिया* नामक एक नई पत्रिका आरंभ की। सन् 1931 में वह शिकागो गया। उस समय अमरीका में नृशास्त्र के क्षेत्र में लोवी (Lowie) और क्रोबर (Kroeber) का दबदबा था। मनोविश्लेषण के विकास ने संस्कृति और व्यक्तित्व के अध्ययनों को बहुत लोकप्रिय बना दिया था। रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अपने संरचनात्मक प्रकार्यवादी विचार से अमरीकी नृशास्त्र में एक नई विचार-पद्धति का आरंभ किया। इस समय ऐगन, वार्नर और टैक्स जैसे विद्वानों ने रैडक्लिफ़-ब्राउन की सैद्धांतिक पद्धति का प्रतिनिधित्व किया।

सन् 1937 में रैडक्लिफ़-ब्राउन इंगलैंड लौटा जहाँ ऑक्सफ़र्ड विश्वविद्यालय में सामाजिक नृशास्त्र के नये पीठ पर उसे नियुक्त किया गया। उसके स्वदेश लौट आने के कुछ समय बाद ही मलिनॉस्की इंगलैंड से बाहर चला गया था। अत: रैडक्लिफ़-ब्राउन ने नृशास्त्र के क्षेत्र में मलिनॉस्की के स्थान पर नेतृत्व ग्रहण किया। एडम कूपर (1975: 75) के शब्दों में, "मलिनॉस्की द्वारा प्रतिपादित सार्थकता, स्पष्टता और समाजशास्त्र के विरोध में उठे अभियान की चुनौती का नेता बना -- रैडक्लिफ़-ब्राउन।" मलिनॉस्की की सैद्धांतिक कमज़ोरी ने बहुत से क्षेत्रीय शोध करने वालों को अपेक्षाकृत अधिक सैद्धांतिक व समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता की ओर प्रवृत किया। ऐसा लगता था कि इस आवश्यकता की पूर्ति रैडक्लिफ़-ब्राउन ही कर सकता था।

रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा प्रस्तावित समाजशास्त्रीय व्याख्या की उपयोगिता अभी सिद्ध की जानी थी। धीरे-धीरे सामाजिक नृशास्त्रियों द्वारा समाजशास्त्रीय विश्लेषण के माध्यम से समाजशास्त्रीय संरचनाओं का परीक्षण किया गया। इन परीक्षणों के परिणाम प्रतिभापूर्ण संबंधों (monographs) के रूप में सामने आए। ये प्रबंध थे: बेटसन का *नवेन* (1936), *इवन्स प्रिचर्ड का षविचक्राफ्ट, ओरेकल्स एंड मैजिक अमंग द अंज़ादे* (1973)।

ऑक्सफ़र्ड में रैडक्लिफ़-ब्राउन का सेवाकाल इवन्स-प्रिचर्ड और मेयर फ़ोर्टीज़ की सहभागिता में बहुत अधिक उपयोगी रहा। उन्होंने कई पुस्तकें प्रकाशित करवाई, जो मुख्य रूप से राजनीतिक संरचना और नातेदारी से संबंधित थीं। सन् 1940 में उन्होंने *अफ़्रीकन पोलिटिकल सिस्टम्स* प्रकाशित की। उसी साल इवन्स-प्रिचर्ड ने *दि नुअर* और *दि पोलिटिकल सिस्टम ऑफ़ दि अनुआक* नामक दो मोनोग्राफ निकाले। सन् 1951 में फ़ोर्टीज़ ने तालेंसी समुदाय पर दो पुस्तकें प्रकाशित की।

इन्ही वर्षों में इवन्स-प्रिचर्ड ने क्रमश: सिरेनाइका के सानुसी और नुआर नातेदारी के बारे में अध्ययन प्रकाशित किए। इस तरह, रैडक्लिफ़-ब्राउन ने अपने नेतृत्व में ब्रिटिश सामाजिक नृशास्त्र के क्षेत्र को एक नया सैद्धांतिक ढांचा, मुख्य रूप से राजनीतिक सरंचना और नातेदारी में रुचि के क्षेत्र प्रदान किये। इनका परिणाम उस समय के कुछ सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली अध्ययनों के रूप में सामने आया।

आपको यह जानने में रुचि होगी कि रैडक्लिफ़-ब्राउन का भारत के जाने-माने समाजशास्त्री एम.

एन. श्रीनिवास पर गहरा प्रभाव पड़ा। श्रीनिवास ने डी. फिल. का अपना शोध प्रबंध रैडक्लिफ़-ब्राउन के मार्गदर्शन में ऑक्सफ़र्ड में पूरा किया था। इस शोध प्रबंध का शीर्षक था: रिलीजन एंड सोसाइटी अमंग दि कुर्गस ऑफ़ साउथ इंडिया (1952) अपने इस शोध प्रबंध में उन्होंने धर्म और सामाजिक गठन के बीच संबंधों को देखने का प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप **संस्कृतिकरण** जैसी महत्वपूर्ण अवधारणा हमारे सामने आई। भारत में गांवों के अध्ययन के आंदोलन का नेतृत्व करते हुए श्रीनिवास ने भारतीय गांव का अध्ययन रैडक्लिफ़-ब्राउन द्वारा विकसित सामाजिक संरचना की अवधारणा के संदर्भ में किया। इस प्रक्रिया में प्रभावशाली जाति जैसी महत्वपूर्ण संकल्पनाओं का विकास हुआ।

बोध प्रश्न 3

i) मलिनॉस्की की विद्वत्ता के एक ऐसे अभिलक्षण के बारे में बताइए जो मलिनॉस्की और उसके अनुयायियों में समान था।

.....

ii) कॉलम 'क' में दी हुई मदों का कॉलम 'ख' से मिलान कीजिए।

क		ख	
i)	ओशिएनिया	अ)	श्रीनिवास
ii)	कुर्ग	आ)	फ़ोर्टीज़
iii)	नावेन	इ)	इवन्स प्रिचर्ड
iv)	हालेन्सी	ई)	बेट्सन
v)	नुअर	उ)	रैडक्लिफ़-ब्राउन

26.5 बीसवीं सदी के तीसरे-चौथे दशक के बाद नृशास्त्रीय शोध का विकास

हमने बार-बार यह बताने का प्रयास किया है कि मलिनॉस्की अपने ढंग के सामाजिक नृशास्त्र को विश्लेषणात्मक रूप प्रदान करने में असफल रहा। उसने जिन संकल्पनाओं का इस्तेमाल किया वे पर्याप्त रूप से विकसित नहीं की गई थीं। इसमें संदेह नहीं कि उसने जिन समाजों का अध्ययन किया, उनके बारे में उसने बहुत व्यापक और रोचक सामग्री इकट्ठी की, लेकिन वह उस सामग्री को ठोस सैद्धांतिक सांचे में नहीं ढाल सका। यदि हम इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखें तो रैडक्लिफ़-ब्राउन के प्रयासों को अधिक अच्छी तरह समझा जा सकता है। रैडक्लिफ़-ब्राउन ने सामाजिक संरचना और प्रकार्य जैसी संकल्पनाओं के प्रयोग के साथ कुछ हद तक अमूर्तीकरण आंरभ किया। परन्तु वह अपने इस प्रयास में बहुत अधिक सफल नहीं हुआ। उसने सामाजिक संरचना के स्वरूप को केवल मूर्त व्यक्तियों के बीच अन्योन्यक्रियाओं और संबंधों के संदर्भ में देखा। वास्तव में, जिस अमूर्तीकरण स्तर का उसने प्रचार किया, वह उस तक स्वयं भी नहीं पहुँच पाया। जिस कार्य को रैडक्लिफ़-ब्राउन नहीं कर सका, उसे सफलतापूर्वक करने का श्रेय इवन्स-प्रिचर्ड को है।

इवन्स-प्रिचर्ड ने सामाजिक संरचना के विचार को आगे बढ़ाया। उसने कहा कि इसका अभिप्राय मुख्य रूप से परिवार, जनजाति अथवा राष्ट्र जैसे समाज के निरंतर चलने वाले स्थायी वर्ग से होता है। उसने इस बात को समझाया कि सामाजिक नृशास्त्री को सामाजिक संरचना के बारे में निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए व्यक्तियों के बीच होने वाली अन्योन्यक्रियाओं के पर्यवेक्षण पर नहीं रुक जाना चाहिए। इसके लिए अमूर्तीकरण के उच्चतर स्तर पर जाना आवश्यक होगा। *दि नुअर* (1940) नामक अपने अध्ययन में उसने नुअर समाज की खंडीय (segmentary) संरचना को

प्रदर्शित किया, जिसमें विभिन्न वर्ग आपस में सामाजिक संरचना के विभिन्न स्तरों पर कहीं एक हैं और कहीं दूसरे संदर्भ में परस्पर विरोधी हैं। इस तरह से उसने सामाजिक संरचना को समझने के लिए उच्चतर स्तर के अमूर्तीकरण का आश्रय लिया। वस्तुत: इवन्स-प्रिचर्ड ने रैडक्लिफ़-ब्राउन के प्रकार्यवाद को अस्वीकार करके विशुद्ध संरचनावाद को प्रवर्तित किया।

एक और महत्वपूर्ण प्रगति का द्योतक था -- संरचनावादी क्लॉड लेव-स्ट्रॉस का विशद् शोधकार्य। लेवी-स्ट्रॉस ने भाषा-शास्त्र के क्षेत्र से बहुत-कुछ प्रेरणा लेकर सामाजिक संरचना के विचार को अमूर्तीकरण के उच्चतम स्तर तक पहुचाया। उसने संरचना और सामाजिक संबंधों के बीच अंतर किया। साथ में, उसने ऐसे विश्लेषणात्मक मॉडल तैयार किए जिनकी मदद से वास्तविक सामाजिक संबंधों की तुलना की जा सकती है और उनमें अंतर दिखाया जा सकता है। लेवी-स्ट्रॉस द्वारा किए गए नातेदारी और मिथक के अध्ययन आगे चलकर समाजशास्त्र में बहुत प्रभावशाली हुए।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि रैडक्लिफ़-ब्राउन ने मलिनॉस्की के प्रकार्यवाद का परिष्कार करके उसे संरचनात्मक प्रकार्यवाद में बदल दिया। रैडक्लिफ़-ब्राउन के पदचिह्नों पर चलते हुए इवन्स-प्रिचर्ड ने अपने सैद्धांतिक ढांचे में कहीं अधिक बड़े स्तर पर अमूर्तीकरण किया और संरचनावाद का विकास किया। फ्रांस में लेवी-स्ट्रॉस के कार्य ने संरचनावाद को नया आयाम दिया। आज समाजशास्त्र में सरंचनावाद के उत्तरवर्ती विकास की अवस्था आ गई है। बहुत से विद्वानों ने साहित्य, भाषा, गणित जैसे ज्ञान-विज्ञान की बहुत-सी शाखाओं से प्रेरणा ली है। परिणामस्वरूप समाजशास्त्र में रोमांचकारी सैद्धांतिक प्रगति हुई है। इस विषय में विस्तार से चर्चा इस पाठ्यक्रम के दायरे से बाहर है। आशा है कि एम.ए. स्तर के पाठ्यक्रम में इस विकास की चर्चा अवश्य होगी।

रैडक्लिफ़-ब्राउन के बाद हुए विकास के संक्षिप्त विवरण ने शायद आपको यह ख़्याल दिया हो कि प्रकार्यवाद मलिनॉस्की के साथ ही समाप्त हो गया। लेकिन वास्तव में ऐसी बात बिल्कुल नहीं है, क्योंकि प्रकार्यवाद इसके बाद भी फलता-फूलता रहा। आज भी समाज विज्ञान में यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत माना जाता है। इस विषय में अमेरिकन समाजशास्त्री टॉल्कट पार्सन्स और रॉबर्ट के मर्टन का महत्वपूर्ण योगदान है। खंड 7 में इनके योगदान के बारे में चर्चा की जाएगी।

26.6 सारांश

इस इकाई में हमने मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन के योगदान का मूल्यांकन किया। पहले हमने मलिनॉस्की की उपलब्धियों की समीक्षा की। उसके बाद हमने कुछ विस्तार से रैडक्लिफ़-ब्राउन की विद्वत्ता की क्षेत्रीय शोधकर्ता और सिद्धांतकार के रूप में चर्चा की। हमने मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मार्गदर्शन में नृवैज्ञानिक अनुसंधान की समीक्षा की। इस इकाई के अंत में समाजशास्त्रीय सिद्धांत में मलिनॉस्की तथा रैडक्लिफ़-ब्राउन के बाद हुए विकास का संक्षिप्त विवरण दिया।

26.7 शब्दावली

अमूर्तीकरण यह शब्द वस्तु से अलग उसके गुण की अभिव्यक्ति करता है और उसके मूर्त रूप को बताने के बजाय उसके आंतरिक रूप की ओर संकेत करता है। इस इकाई के संदर्भ में इस शब्द का उपयोग मानव-व्यवहार के वर्णनात्मक विवरण की जगह सैद्धांतिक विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए किया गया है।

आदिवासी जनजातियां किसी स्थान के मूल निवासी। ऑस्ट्रेलिया के जनजातीय लोगों को सामान्यत: आदिवासी (aborigines) कहा जाता है।

नृजाति विवरण (ethnography)	विशेष विषय पर लिखा विवरण
संस्कृतिकरण	इस संकल्पना को एम.एन. श्रीनिवास ने प्रवर्तित किया। उसके अनुसार 'संस्कृतिकरण' उस प्रक्रिया को कहते हैं, जिसमें उच्च वर्ग अथवा द्विज जाति के लोगों के अनुकरण में नीची जाति के हिन्दू या जनजाति के लोग या दूसरे समूहों के लोग अपने रीति-रिवाजों, संस्कारों, विचारधारा और रहन-सहन की पद्धति को बदल देते हैं।
एककालिक	समसामयिक संदर्भ में, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख किए बिना, किये जाने वाले समाज के अध्ययन को एककालिक (synchronic) अध्ययन कहते हैं।

26.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

मेयर, लूसी, 1984. *एन इंट्रोडक्शन टु सोशल एन्थ्रोपोलॉजी.* आक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: नई दिल्ली

26.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) मलिनॉस्की को विकासवादी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह अनुभवाश्रित वास्तविकता से अभिभूत था। यद्यपि वह मन से विकासवादी रहा, लेकिन व्यवहार में वह विकासवादियों के मानव-संस्कृति के बारे में अटकलबाज़ियों के प्रति प्रेम से दूर होता जा रहा था।

ii) सामाजिक तत्वों के इधर-उधर से एकत्रित किए गए वर्णन से संस्कृति के विभिन्न पक्षों के बीच व्यवस्थित और तार्किक सह-संबंध ढूंढ पाना संभव नहीं है। व्यवस्थित नृजातिविवरण हमेशा समाज विशेष की सामग्री पर आधारित होता है इसलिए संस्कृति के सभी पक्षों को एकीकृत समग्र रूप में समझ पाना संभव होता है।

बोध प्रश्न 2

i) रैडक्लिफ़-ब्राउन ने जिन लोगों का अध्ययन किया, उनसे उसने कुछ अलगाव और दूरी बनाए रखी। इसलिए उसका शोधकार्य कभी-कभी नीरस, निर्जीव और बेकार-सा दिखाई देता है। दूसरी ओर, मलिनॉस्की ने अपने क्षेत्रीय शोधकार्य में समाज विशेष से अपने आपको पूरी तरह सम्बद्ध रखा, इसलिए उसका क्षेत्रीय शोध विवरण सजीव और विस्तृत जानकारी से परिपूर्ण है।

ii) मलिनॉस्की ने प्रकार्य की व्यवस्था मुख्य रूप से शरीर रचना और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के संदर्भ में की है। दूसरी ओर, रैडक्लिफ़-ब्राउन ने समाज की आवश्यकताओं अथवा अस्तित्व के लिए आवश्यक दशाओं की चर्चा की है।

बोध प्रश्न 3

i) अत्यधिक सावधानी से तैयार किया हुआ नृजातिविवरण।

ii) i) उ
ii) अ
iii) ई
iv) आ
v) इ

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ)

बखोफन, जे.जे. 1861. *दि मदर-राइट.* प्रिस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस: प्रिस्टन (राल्फ मनहाइम द्वारा 1967 में अनूदित)।

बेटसन, जी. 1958. *नावेन.* स्टैनफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: स्टैनफ़ोर्ड (सर्वप्रथम 1936 में प्रकाशित)।

बीटी, जे.एच.एम. 1964. *अदर कल्चर्स.* रटलज एण्ड केगन पॉल: लंदन,

दर्खाइम, ई.ई. 1947. *दि डिवीजन ऑफ़ लेबर.* फ्री प्रेस: न्यूयार्क

दर्खाइम, ई.ई. 1976. *दि एलीमेंट्र फ़ार्म्स ऑफ़ दि रिलीजस लाइफ़* एलेन एण्ड अनविन: लंदन

इवन्स प्रिचर्ड, ई.ई. 1937. *विचक्राफ़्ट, ओरेकल्स एण्ड मैजिक अमंग दि अजांदे* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफ़ोर्ड

इवन्स प्रिचर्ड, ई.ई. 1940. *दि नुअर.* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: आक्सफ़ोर्ड

इवन्स प्रिचर्ड, ई.ई. 1940. *दि पोलिटिकल सिस्टम्स ऑफ़ दि अनुआक.* ए.एम.एस. प्रेस: लंदन

इवन्स प्रिचर्ड, ई.ई. 1949. *दि सानुसी ऑफ़ साइरेनाइका.* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफ़ोर्ड

इवन्स प्रिचर्ड, ई.ई. 1951. *किनशिप एण्ड मैरिज अमंग दि नुअर.* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफ़ोर्ड

इवन्स प्रिचर्ड, ई.ई. 1954. *सोशल एंथ्रोपोलॉजी.* कोएन एण्ड वेस्ट लिमिटेड: लंदन (सर्वप्रथम 1951 में प्रकाशित)।

इवन्स-प्रिचर्ड ई.ई. और फ़ोर्टिज़ मेयर (संपा.) 1940. *अफ़्रीकन पोलीटिकल सिस्टम्स.* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफ़ोर्ड

फ़र्गुसन, ए. 1767. *एन एस्से ऑन दि हिस्ट्री ऑफ़ सिविल सोसायटी.* एडिनबरा यूनिवर्सिटी प्रेस: एडिनबरा

फ़र्थ, रेमण्ड 1951. *वी दि टिकोपिया.* जार्ज एलेन एण्ड अनविन: लंदन (सर्वप्रथम 1936 में प्रकाशित)

फ़र्थ, रेमण्ड (संपा.), 1957. *मैन एण्ड कल्चर.* रटलज एण्ड केगन पॉल: लंदन

फोर्टिज़, एम. 1945. *दि डायनामिक्स ऑफ़ क्लैनशिप अमंग दि टालेंसी.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफोर्ड

फोर्टिज़, एम. 1949. *दि वेव ऑफ़ किनशिप अमंग दि टालेंसी.* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफोर्ड

फ्रेजर, जे.जी. 1922. *दि गोल्डन बाउ.* मैक्मिलन: लंदन (सर्वप्रथम 1890 में प्रकाशित)

हॉबहाउस, एल.टी. 1906. *मॉर्ल्स इन इवोल्युशन: ए स्टडी इन कंपेरेटिव एथिक्स.* जानसन प्रेस: लंदन

जैन, आर.के. 1989. *ए.आर.रैडक्लिफ़-ब्राउन एण्ड दि दर्खाइमियन स्कूल ऑफ़ फ्रेंच सोशोलॉजी: मेथोडोलोजिकल रिफ्लैक्शन्स.* स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, वर्किंग पेपर सिरीज़, 1989-04,55 पृष्ठ

जुनोद, एच.ए. 1912-13 *दि लाइफ़ ऑफ़ साउथ अफ़्रीकन ट्राइब.* ए.एम.एस. प्रेस: लंदन

कैबरि, फ़िलिस, एम. 1939 *एबोरोजिनल वोमन: सेक्रेड एण्ड प्रोफेन.* जार्ज राटलज एण्ड सन्ज़: लंदन

कूपर, एडम 1975. *एंथ्रोपोलीजिस्ट्स एण्ड एंथ्रोपोलिजी*--दि ब्रिटिश स्कूल. पेनगुइन: लंदन

कूपर एडम 2000. *कल्चर: द ऐन्थ्रोपॉलजिस्ट्स एकाउन्ट.* हार्वर्ड यूनीवर्सिटी प्रैस: केम्ब्रिज, एम ए

कूपर, हिल्डा, 1947. *एन अफ़्रीकन एरीस्टोक्रेसी: रैंक अमंग दि स्वाज़ी.* क्लेरण्डन प्रेस: ऑक्सफोर्ड

लीच, ई.आर. 1957. *दि एपिस्टेमोजोजिकल बैकग्राउंड टू मलिनास्कीज़ इंपिरिसस्म. इन रेमण्ड फ़र्थ* (संपा.) कल्चर: एन इवैल्युशन ऑफ़ दि वर्क ऑफ़ ब्रोनिस्ला मलिनॉस्की. राटलज एण्ड कैगन पॉल: लंदन

लेवी ब्रुल, एल. 1923. *प्रिमिटिव मेंटलिटी* (सर्वप्रथम 1922 में फ्रेंच में प्रकाशित) लिलियन ए. क्लेयर द्वारा अनूदित. ए.एम.एस. प्रेस: लंदन

लेवी ब्रुल, एल. 1926. *हाऊ नेटिव्स थिंक* (सर्वप्रथम 1922 में फ्रेंच में प्रकाशित) लिलियन ए. क्लेयर द्वारा अनूदित. आयेर कम्पनी पब्लिशज़: लंदन

लोवी. आर. एच., 1937. *दि हिस्ट्री ऑफ़ एंथ्रोनोलोजिकल थ्योरी.* फ़र्रार एण्ड राइनहाट: न्यूयॉर्क

मैक्लेनन, जे.एफ. 1865. *प्रिमिटिव मैरिज.* डर्बी बुक्स: लंदन

मेन, एच. 1961. *एंशिएंट लॉ.* एवरीमैन्स लाइब्रेरी: लंदन

मेन, एच. 1871. *विलेज--कम्युनिटीज़ इन दि ईस्ट एण्ड वेस्ट.* डर्बी बुक्स: लंदन

मजूमदार, डी.एन. 1937. *ए ट्राइब इन ट्रांजिशन: ए स्टडी इन कल्चर पैटर्न्स.* लांगमैन ग्रीन्स एण्ड कम्पनी: लंदन

मलिनॉस्की, बी. 1922. *अर्गोनाट्स ऑफ़ दि वेस्टर्न पैसिफ़िक* वेवलैंड प्रेस: लंदन

मलिनॉस्की, बी. 1929. *दि सैक्सुअल लाइफ़ ऑफ़ सेवेज़िस इन नार्थ वेस्ट मलेनेसिया.* हरकोर्ट: न्यूयार्क

मलिनॉस्की, बी. 1931. *कल्चर.* एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ दि सोशल साइंसिस में 4: 621-46

मलिनॉस्की, बी. 1935. *कोरल गार्डन्स एण्ड देयर मैजिक.* इंडियाना यूनीवर्सिटी प्रेस: ब्लूमिंगटन

मलिनॉस्की, बी. 1944. *ए साइंटिफ़िक थ्योरी ऑफ़ कल्चर.* दि नॉर्थ कैरोलाइना यूनिवर्सिटी प्रेस: चैपेल हिल

मलिनॉस्की, बी. 1948. *मैजिक, साइंस एण्ड रिलीजन एण्ड अदर एक्सेज़.* सोवेनिर प्रेस: लंदन (सर्वप्रथम 1925 में प्रकाशित) मांटेस्क्यू, बैरन, डी, 1748. *दि स्पिरिट ऑफ़ दि लाज़* (1949 में टी. नजेंट द्वारा अनूदित) ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफोर्ड

मॉगर्न, एल.एच. 1871. *सिस्टम्स ऑफ़ कसेंग्युनिटी एंड एफ़ीनिटी ऑफ़ दि ह्यूमन फ़ैमिली.* स्मिथसोनियन कंट्रीब्यूशन टू नालेज 17: 4-602

मॉगर्न, एल.एच. 1877. *एन्शिएन्ट सोसाइटी.* यूनीवर्सिटी ऑफ़ अरीज़ोना प्रेस: अरीज़ोना

नाडेल एस.एफ. 1957. *मलिनॉस्की ऑन मैजिक एंड रिलिजन* (जादू तथा धर्म के बारे में मलिनॉस्की के विचार) रेमण्ड फ़र्थ (संपा.) की पुस्तक *मैन एण्ड कल्चर* में. रटलज एण्ड कैगन पॉल: लंदन

नीबोएर, एच.जे. 1990. *स्लेवरी ए.एन इंडस्ट्रियल सिस्टम:* एथनोलोजीकल रिसर्चेज. बी. फ़्रेकलिन: न्यूयार्क

पासन्स, टी., 1957. ***मलिनॉस्की एण्ड द थियरी ऑफ़ सोशल सिस्टम्स*** (मलिनॉस्की तथा सामाजिक प्रणालियों का सिद्धांत) रेमण्ड फ़र्थ (संपा.) की *मैन एण्ड कल्चर* में। रटलज एण्ड केगन पॉल: लंदन

पैरी, डब्ल्यू, जे. 1923. *दि चिल्ड्रन ऑफ़ दि सन.* ए.एम.एस. प्रेस: न्यूयार्क

पिडंगटन., आर. 1957. *मलिनॉस्कीज़ थियरी ऑफ़ नीड्स* (मलिनॉस्की का आवश्यकताओं का सिद्धांत) (रिमण्ड फ़र्थ (सं.पा.) की मैन एण्ड कल्चर में। रटलज़ एण्ड केगन पॉल: लंदन

पोकॉक, डी.एफ, 1961. *सोशल एंथ्रोपोलॉजी.* शीड एण्ड वार्ड: लंदन

रैडक्लिफ़-ब्राउन, ए.आर. 1964. *दि अंडमान आइलैंडर्स.* फ्री प्रेस: ग्लेनको (सर्वप्रथम 1922 में प्रकाशित)

रैडक्लिफ़-ब्राउन, ए.आर. 1971. *स्ट्रक्चर एण्ड फ़ंक्शन इन प्रिमिटिव सोसाइटीज़.* कोएन एण्ड वेस्ट लि.: लंदन (सर्वप्रथम 1952 में प्रकाशित)

रिचडर्स, ए.आई. 1932. *हंगर एण्ड वर्क इन ए सेवेज ट्राइब.* ग्रीनवुड प्रेस: लंदन

रिचडर्स, ए.आई. 1939. *लैंड, लेबर एण्ड डाइट इन नार्दर्न रोडेशिया.* ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफोर्ड

रिवर्स, डब्ल्यू. एच.आर. 1906. *दि. टोडाज़,* मैक्मिलन: लंदन

रिवर्स, डब्ल्यू. एच.आर. 1914. *दि हिस्ट्री ऑफ़ दि मलेनेसियन सोसाइटी.* कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस: कैम्ब्रिज

शपीरा, आई. 1950. ***मैरीड लाइफ़ इन अफ़्रीकन ट्राइब.*** **ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफोर्ड**

शपीरा, आई. 1943. *नेटिव लैंड टेन्योन इन बेचुआनालैंड प्रोटेक्टोरेट.* वडेल प्रेस: लंदन

स्मिथ, ए. 1776. *ए इंक्वायरी इंटू दि नेंचर एण्ड काज़िस ऑफ़ दि वेल्थ ऑफ नेशन्स.* (पेनगुइन संस्करण 1969 में प्रकाशित) पेनगुइन: लंदन

स्मिथ, डब्ल्यू. रॉबर्टसन 1889. *लेक्चर्स ऑन दि रिलीजन ऑफ़ दि सेमाइटस.* आर्डेन लाइब्रेरी: लंदन

श्रीनिवास, एम.एन. 1952. *रिलीजन एण्ड सोसाइटी अमंग दि कुर्गस ऑफ़ साउथ इंडिया.* ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस: लंदन

श्रीनिवास, एम.एन. (सं.पा.) 1958. *मेथड इन सोशल एंथ्रोपोलॉजी.* यूनीवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस: शिकागो

टाइलर, ई.बी. 1865. *रिसर्चिज़ इंटू दि अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ मैनकाइंड एण्ड दि डेवलपमेंट ऑफ़ सिविलाइज़ेशन.* फ्रोनिक्स बुक्स: लंदन

टाइलर, ई.बी. 1871. *प्रिमिटिव कल्चर.* मरे: लंदन

टाइलर, ई.बी. 1881. *एंथ्रोपोलॉजी: एन इंट्रोडक्शन टू दि स्टडी ऑफ़ मैन एण्ड सिविलाइजेशन.* एपलटन: न्यूयार्क

वेस्टरमार्क, ई. 1891. *दि हिस्ट्री ऑफ़ ह्यूमन मैरिज.* जॉनसन रिप्र: लंदन

वेस्टरमार्क, ई. 1906. *दि ओरीजिन एण्ड डेवलपमेंट ऑफ दि मॉरल आइडियाज़.* जॉनसन रिप्र: लंदन

ब) हिंदी में उपलब्ध पुस्तकें

ब्रॉनिस्लाव, मलिनॉस्की, *वन्य समाज में अपराध और प्रथा.* मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी: भोपाल

शपीरा, हेरी.एल. *मानव, संस्कृति और समाज.* मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी: भोपाल

मेयर, लूसी, *सामाजिक नृविज्ञान की भूमिका.* बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी: पटना

सत्यदेव, *सामाजिक विज्ञानों की शोध पद्धतियां.* हरियाणा हिंदी ग्रंथ अकादमी: चण्डीगढ़

शल्य, यशदेव, *संस्कृति.* राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी: जयपुर

NOTES